Prabhat Khabar (Date: - 08/02/2020)

विकास की रफ्तार में बिहार एक बार फिर देश से आगे

संवाददाता ▷ पटना

बिहार की विकास दर इस बार फिर राष्ट्रीय विकास दर से अधिक आंकी गयी है. वर्तमान मूल्य पर वित्तीय वर्ष 2018-19 में सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) पांच लाख 57 हजार 490 करोड़ रहा. इस आधार पर राज्य की वार्षिक वृद्धि दर 15% आंकी गयी है, जबकि राष्ट्रीय विकास दर 11.20% दर्ज की गयी है. यह जानकारी योजना एवं विकास मंत्री महेश्वर हजारी ने शुक्रवार को सूचना भवन के सभाकक्ष में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी. उन्होंने राज्य में योजना एवं विकास से जुड़े आंकड़े जारी करते हुए कहा कि वर्तमान मूल्य पर ही 2018-19 में प्रति व्यक्ति सकल राज्य घरेलू उत्पाद (प्रति व्यक्ति आय) 47 हजार 541 करोड़ दर्ज किया गया, जो 2017-18 की तुलना में 13.20% अधिक है, जबकि इसमें राष्ट्रीय वृद्धि दर 10% ही रही है. वहीं, 2011-12 के स्थिर मूल्य को आधार मानते हुए 2018-19 का जीएसडीपी तीन लाख 94 हजार 350 करोड़ दर्ज किया गया है. इस आधार पर राज्य की विकास दर 10.50% है, जबकि राष्ट्रीय विकास दर 6.8% दर्ज की गयी है. स्थिर मूल्य पर राज्य की प्रति व्यक्ति आय में 9% बढ़ोतरी दर्ज की गयी है, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर ● बाकी पेज 15 पर

2018-2019 में राज्य की विकास दर 15%, तो देश की 11.20%

जनवरी तक खर्च हुई मात्र 41 फीसदी योजना राशि

मंत्री हजारी ने कहा कि चालू वित्तीय वर्ष के योजना आकार एक लाख एक करोड़ का है, जिसमें जनवरी, 2020 तक 41% राशि ही खर्च हुई है. हालांकि, उन्होंने दावा किया कि वित्तीय वर्ष समाप्त होने तक शत-प्रतिशत राशि खर्च हो जायेगी. 2018-19 में योजना मद की 90.89% राशि खर्च हुई थी. सीएम निश्चय स्वयं सहायता भत्ता योजना के तहत अब तक 4.15 लाख आवेदन आये थे, जिन पर 505 करोड़ रुपये खर्च हुए हैं.

शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में जानकारी देते योजना एवं विकास मंत्री महेश्वर हजारी व विभाग के सचिव मनीष कुमार वर्मा.

इधर कर्ज देने का गिर रहा बैंकों का ग्राफ

पटना. राज्य में आम लोगों को कर्ज देने में लगातार तीन साल से बैंकों का ग्राफ गिरता जा रहा है. कृषि और इससे जुड़े क्षेत्रों में स्थिति बेहद खराब है. इस बार एसीपी यानी लोन बांटने की स्थिति अब तक के न्यूनतम स्तर 54.58% पर पहुंच गयी है. चालू वित्तीय वर्ष में बैंकों का साख-जमा अनुपात घटकर 42.98% पर पहुंच गया है. शुक्रवार को राज्यस्तरीय बैंकर्स कमेटी की बैठक में डिप्टी सीएम ने इस पर चिंता जतायी. ● विस्तृत पेज 08

Prabhat Khabar (Date: - 08/02/2020)

बिहार विधानमंडल भवन के 100 साल पूरे

पटना

बिहार विधानमंडल भवन के सौ साल पूरे हो गये हैं. इसे लेकर आकर्षक रोशनी की गयी है. रोशनी में नहाये विधानमंडल की खूबसूरती देखते ही बन रही है. फोटो. सरोज

Prabhat Khabar (Date: - 08/02/2020)

कला के रंग

बख्तियार खिलजी के हमले के बाद जब चीन के बौद्ध भिक्षु नालंदा से वापस जाने लगे, तो यहां से बुद्ध की आकृति को कपड़ों पर छाप कर चीन लेते गये थे. चीन के लोगों ने इस तकनीक को समझा और इसे अपने देश के बाद जापान और वहां से आज दुनिया भर में छापा कला प्रसिद्ध हो चुकी है.

दुनिया को बिहार ने दिया छापा कला का ज्ञान

बिहार में विकसित छापा कला आज दुनिया की सबसे प्रचलित कला की विधा बन चुकी है. ऐतिहासिक तथ्यों में यह कहा जाता है कि बख्तियार खिलजी के हमले के बाद जब चीन के बौद्ध भिक्षु नालंदा से वापस जाने लगे थे तो यहां से भगवान बुद्ध की आकृति को कपड़ों पर छाप कर चीन लेते गये थे. चीन के लोगों ने इस तकनीक को समझा और इसे अपने यहां राष्ट्रीय स्तर का बनाया. यहां से चीन के पर्यटक जब जापान गये तो वहां जापानियों ने भी नयी कला को अपनाया. जापान में वुड प्रिंट काफी विकसित हुई और यह यूरोप तक पहुंची और इनका प्रभाव यूरोपियन शैली की पेंटिंग पर पड़ा. इसके बाद यूरोपियन प्रिंट मेकिंग नये रूप में विकसित होकर आयी. अब तो यह दुनिया की सबसे प्रचलित कला विधाओं में से एक है. दुनिया की प्राचीन कलाओं में से एक छपाई कला के बाद छापा कला शुरू हुई, जो धीरे-धीरे कला जगत में स्वतंत्र विधा बन गयी. सन 1822 में ब्रिटिश अधिकारी चार्ल्स डी. आयली पटना में अफीम का एजेंट बन कर आया तो उसने गुलजारबाग में लिथोग्राफ प्रेस की स्थापना की. यहां से पटना कलम की तस्वीरें बनती थी. धीरे-धीरे यहां छापाकला का प्रचार-प्रसार होने लगा. 1939 में कला एवं शिल्प विद्यालय की स्थापना पटना में हुई. छापा कला की बढ़ती लोकप्रियता के कारण सन 1966 ई. में यहां छापा कला विभाग स्थापित हुआ. अपने सीमित साधनों में यहां के मेधावी छात्र छाया चित्र बनाने लगे.

1452 ई में जर्मनी में छपाई कला का प्रारंभ हुआ.

2014 में कंटेपरेरी आर्ट को लेकर अमेरिका के मिशिगन सिटी में कुल 13 कलाकारों की कला का चयन किया गया था. 12 भारतीयों में से एक बिहार के श्याम शर्मा के कुल छह प्रिंट को छापा कला सेगमेंट में सेलेक्ट किया गया था. इनके सभी चित्र बिहार की माटी पर आधारित थी, जो कि एकरंगी छापा चित्र है. वरिष्ठ कलाकार और इसी साल पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित श्याम शर्मा कहते हैं कि आज चित्रकला की तरह छापा कला माध्यम भी विश्व में एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम बन गया है. यह विश्व की प्राचीन अभिव्यक्ति का माध्यम है. इसका प्रारंभ छपाई कला के बाद हुआ. सन 1452 ई. में जर्मनी में छपाई कला का प्रारंभ हुआ. पुस्तकों में चित्र लकड़ी पर उत्कीर्ण कर ब्लॉक से छपते थे. बाद में कलाकार स्वयं ब्लॉक बनाने लगे. इन छपे चित्रों में कलात्मकता अधिक होती थी. मौलिक सोच के कारण कलाकार छापाकला द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्ति करने लगे. छापाकला को ग्रीक भाषा में ग्राफिकोस लैटिन भाषा में ग्राफीकुस और अंग्रेजी में ग्राफिक कहा जाने लगा. आजकल इसे प्रिंट मेकिंग या छापा कला कहा जाता है. वे कहते हैं कि प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम में दो छपे हुए रेशम के कपड़े मिलते हैं जिसमें एक राजगृह का छपा हुआ है और दूसरा दक्षिण भारत के हैं. यानी छापा कला का बिहार से बहुत पुराना कनेक्शन है.

प्रस्तुतिः रविशंकर उपाध्याय